विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती - प्रेमचंद

क्या हम इस बात से कोई सबक ले सकते हैं?

यह अविश्वसनीय है, फिर भी यह सत्य है!

एक हवाई जहाज दूसरे हवाई जहाज से टकरा जाए और टकराने की वह से वह जलते हुए आग के गोले में तब्दील हो जाए, तो भला कौन होगा जो इस बात पर विश्वास करेगा कि उस दुर्घटना ग्रस्त वायुयान के सारे यात्री और सारे क्रू सदस्य जीवित हैं!

लेकिन यह चमत्कार हुआ, हाल में हुआ।

बात इसी साल (2024) के दूसरे दिन की है और जापान की है। जापान एयरलाइंस का एक विमान दो जनवरी की शाम न्यू चितोजे एयरपोर्ट से अपनी उड़ान संख्या जेएएल 516 पर रवाना हुआ और लगभग दो घण्टे बाद हनेदा एयरपोर्ट पर इसकी लैण्डिंग हुई। इस विमान में कुल 379 लोग सवार थे जिनमें 8 बच्चे और 12 क्रू मेम्बर्स भी शामिल थे। जैसे ही इस विमान ने हनेदा एयरपोर्ट पर लैण्ड किया, वहीं खड़े कोस्ट गार्ड के एक फिक्स्ड विंग विमान से इसकी टक्कर हो गई। कोस्ट गार्ड का यह विमान नए साल पर आए भूकंप के पीड़ितों के लिए सहायता सामग्री लेकर आया था और बहुत छोटा था। उसमें केवल पांच लोग सवार थे। टक्कर होते ही जापान एयरलाइंस का यह विमान एक आग के गोले में बदल गया। कल्पना की जा सकती है कि इस विमान में सवार 379 लोगों का क्या हुआ होगा! लेकिन आप जो कल्पना कर रहे हैं वैसा हुआ नहीं। सौभाग्य से। सौभाग्य से भी और क्रू सदस्यों की दक्षता से भी और सबसे ज़्यादा विमान में सवार यात्रियों की समझदारी और उनके धैर्यपूर्ण व्यवहार की वजह से। विमान के सारे के सारे यात्रियों को, मय क्रू मेम्बर्स के बचा लिया गया। बस, एक यात्री को थोड़ी-सी चोट आई और तेरह यात्रियों ने दर्द और अन्य शारीरिक कष्टों के लिए मेडिकल सुविधाओं की मांग की। हां, यह बात ज़रूर बहुत खराब रही कि कोस्ट गार्ड के वायुयान में सवार छह में से पांच लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा। केवल एक ही यात्री अपनी जान बचा पाने में सफल रहा। यहीं यह याद किया जा सकता है कि 1977 में स्पेन में रोडियस एयरपोर्ट पर दो बोइंग विमान आपस में टकरा गए थे और इस टक्कर में 583 लोग मारे गए थे। इसे हवाई यातायात के इतिहास की सबसे बड़ी दुर्घटना माना जाता है। हवाई यातायात के प्रबंधकों ने इस, और बाद वाली भी अनेक दुर्घटनाओं से सबक लिया और नियमों और व्यवस्थाओं में लगातार सुधार किए। यह सिलसिला अभी भी ज़ारी है। लेकिन हाल की यह दुर्घटना तो चमत्कारी है, इतनी बड़ी दुर्घटना और जान की एक भी क्षित नहीं! यह चमत्कार हुआ कैसे? विमान के क्रू मेम्बर्स ने बताया कि अपने प्रशिक्षणों में उन्होंने जो भी सीखा उस पर पूरी तरह अमल किया। यहीं यह बात भी कि हम आम लोग क्रू के नाम पर केवल पायलट और एयर होस्टेसों को जानते हैं और हमारी समझ में एयर होस्टेसों का काम हमें खाद्य और पेय सामग्री सुलभ कराना है, जबकि असल में यह उनका प्राथमिक काम नहीं है। उनका प्राथमिक काम है यात्रियों की सुरक्षा और इसके लिए उन्हें बाकायदा प्रशिक्षण दिया जाता है। विमान के चालक दल के सदस्यों को तीन सप्ताह की एक कड़ी इवैकुएशन और रेस्क्यू ट्रेनिंग लेनी पड़ती है। इतना ही नहीं उन्हें हर साल यह ट्रेनिंग लेनी होती है। इसके अलावा भी उन्हें हवाई जहाज में सवार यात्रियों की सुरक्षा के लिए और उनकी जान बचाने के लिए अनेक प्रकार के प्रशिक्षण दिए जाते हैं। लेकिन जो ख़ास बात मैं कहना चाहता हूं वह यह है कि इन क्रू सदस्यों के प्रशिक्षण का कोई अर्थ नहीं रह जाता, अगर विमान पर सवार यात्रियों ने उनके निर्देशों का अक्षरश: पालन न किया होता। ज़रा उस स्थिति की कल्पना कीजिए जब विमान आग की लपटों से घिरा हो और केवल बारह क्रू मेम्बर 367 यात्रियों को निर्देश दे रहे हों। क्या वे यात्री उस समय क्रू मेम्बर्स की बात सुनेंगे? क्या वे अपनी मनमानी नहीं करने लगेंगे? क्या वे धक्कामुक्की नहीं करेंगे? क्या हरेक यह कोशिश नहीं करेगा कि जैसे भी हो वह तो बच निकले? यह लिखते हुए मेरे मन के परदे पर अपने देश की सड़कों की छवि उभरने लगती है। कैसे हम चौराहों पर लाल बत्ती की अनदेखी करते हैं, कैसे हम थोड़ी-सी भीड़ होते ही लेन व्यवस्था को नष्ट करते हुए अपनी गाड़ियां आड़ी-टेढ़ी लगा कर संकट को और बढ़ा देते हैं? सड़क पर वाहन चलाते हुए मैं प्राय: यह महसूस करता हूं कि अगर हम अपनी-अपनी लेन में ड्राइव करते रहें तो यातायात बहुत सुगमता से चलता रहे, लेकिन ऐसा होता नहीं है। कोई न कोई अपनी गति बढ़ाकर दांये-बांये से आगे निकल जाता है और इस तरह वह सामने से आ रहे यातायात को बाधित कर देता है या फिर अपनी ही लेन में आगे घुसने का प्रयत्न कर लेन की गति को अवरुद्ध कर देता है। यह भी याद आता है कि अगर हम हवाई जहाज में सवार होते हैं तो जब हमारा जहाज लैण्ड करने को होता है तो क्रू के निर्देशों को अनसुना करते हुए हम ओवरहेड बिन से अपना सामान निकाल कर सबसे पहले बाहर निकलने के प्रयास में सभी का निकलना कठिन बना देते हैं! हम यह भी चिंता नहीं करते कि अपना सामान निकालते वक्त किसी और को चोट तो नहीं पहुंचा रहे हैं। यह भी याद आता है कि एयर होस्टेस के लाख मना करने के बावज़ूद हम अपने मोबाइल को स्विच ऑफ नहीं करते हैं! अगर ऐसे यात्री हों और उनकी संख्या 367 हो तो बेचारे 12 क्रू मेम्बर्स क्या कर लेंगे? लेकिन अगर वे बारह क्रू मेम्बर्स इन 367 यात्रियों को केवल 18 मिनिट में बचा सके तो निश्चय ही इसमें उन 367 यात्रियों की भूमिका बहुत बड़ी है। इन क्रू मेम्बर्स ने यात्रियों से कहा कि वे अपने सामान की परवाह किए बगैर ही तुरंत बाहर निकलें। बाद में ग्रीनविच यूनिवर्सिटी में फायर सेफ्टी इंजीनियरिंग ग्रुप के निदेशक प्रोफ़ेसर एड गैलिया ने बताया कि ''मैंने जितने भी वीडियो देखे, उनमें मैंने एक भी यात्री को अपना सामान साथ लिये नहीं देखा। अगर लोग अपना केबिन लगेज साथ लेने की कोशिश करते तो यह खतरनाक हो सकता था, क्योंकि इससे विमान से यात्रियों को निकालने की प्रक्रिया धीमी हो जाती।'' दुर्घटनाग्रस्त विमान का अगला हिस्सा नीचे की तरफ झुक गया था जिससे यात्रियों का बाहर निकलना कठिन हो गया था। विमान के आगे झुके होने की वजह से स्लाइडस भी ठीक से नहीं लगाए जा सक रहे थे। दुर्घटनाग्रस्त हो जाने की वजह से विमान के आठ में से केवल दो इमर्जेंसी द्वार ही उपयोग में लिये जा सकते थे। इसके अलावा विमान का अनाउंसमेंट सिस्टम भी ठीक से काम नहीं कर रहा था अत: क्रू मेम्बर्स को मेग़ाफोन पर तेज़ आवाज़ में बोलकर यात्रियों को निर्देश देने पड़ रहे थे। इन विषम स्थितियों में, सोचा जा सकता है कि यात्रियों ने कैसे अनुशासित व्यवहार का प्रदर्शन किया होगा। अपने भारत के अनुभवों को स्मरण करते हुए मैं तो उस जापानी वायुयान के यात्रियों के व्यवहार की कल्पना भी नहीं कर पा रहा हूं! हमें ऐसे व्यवहार की आदत ही नहीं है। आप हमारा पूरा नागरिक जीवन याद कर लें। आपको कहां अनुशासन नज़र आता है? कहां हम प्रदत्त निर्देशों का पालन करते हैं? कहां हम औरों की फिक्र करते हैं? हवाई यात्रा शुरू करने से पहले जब बोर्डिंग शुरू होती है और अनाउंसमेंट होता है कि अमुक से अमुक क्रमांक तक वाले यात्री पहले आएं, यह जानते हुए भी कि हमारी सीट हमारे लिए एकदम आरक्षित है, हम उस निर्देश को अनसुना कर भीतर घुसने का प्रयास करते हैं। क्यू नाम की व्यवस्था से तो जैसे हमें चिढ़ है। अगर क्यू में खड़े हो भी गए तो आगे वाले से इतना चिपक कर खड़े होंगे कि हम सांस लें तो उसे महसूस हो, और यह ज़रूरी भी है। अगर क्यू में दो लोगों के बीच थोड़ी भी जगह रह गई तो तीसरा वहां घुसने में देर नहीं करेगा। जापान के इस प्रसंग के बारे में पढ़ते हुए मुझे बराबर लगता रहा है कि उस जहाज में अगर भारतीय यात्री होते तो वे ऐसा व्यवहार कभी भी नहीं करते। होता रहता अनाउंसमेंट लेकिन उनमें से अनेक केबिन से अपना सामान निकालने के चक्कर में औरों का मार्ग अवरुद्ध करते या धक्का-मुक्की कर बाहर निकलने वालों की गति को धीमा कर देते! और इस सब का जो परिणाम होता, उसकी कल्पना करने में किसी को कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए! जापान के इस प्रसंग का ज़िक्र मैंने अपने देश वासियों की आलोचना करने के लिए नहीं किया है। हमारे देश में बहुत सारी अच्छाइयां हैं। हमारे नागरिक बहुत भले हैं। वे बहुत मेहनती भी हैं। लेकिन उनमें नागरिक बोध का विकास अभी होगा शेष है। मुझे हमेशा लगता है कि बग़ैर समुचित नागरिक बोध के हमारी बहुत सारी अच्छाइयां निरर्थक हो जाती हैं! अगर हम जापान के इस अविश्वसनीय लगने वाले हवाई हादसे से कोई सबक ले सकें तो यह सबक लेना चाहिए कि हम अनुशासित नागरिक बनें। दिए गए निर्देशों का अक्षरश: पालन करें और किसी भी हालत में व्यवस्था को छिन्न भिन्न न करें!

हम यह भी चिंता नहीं करते कि अपना सामान निकालते वक्त किसी और को चोट तो नहीं पहुंचा रहे हैं। यह भी याद आता है कि एयर होस्टेस के लाख मना करने के बावज़ूद हम अपने मोबाइल को स्विच ऑफ नहीं करते हैं! अगर ऐसे यात्री हों और उनकी संख्या 367 हो तो बेचारे 12 क्रू मेम्बर्स क्या कर लेंगे? लेकिन अगर वे बारह क्रू मेम्बर्स इन 367 यात्रियों को केवल 18 मिनिट में बचा सके तो निश्चय ही इसमें उन 367 यात्रियों की भूमिका बहुत बड़ी है। इन क्रू मेम्बर्स ने यात्रियों से कहा कि वे अपने सामान की परवाह किए बगैर ही तुरंत बाहर निकलें।

अतिथि संपादक :
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

समाज सुधारक, युग प्रवर्तक, हिंदू सम्राट स्वामी विवेकानंद

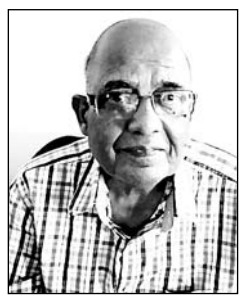

डॉ. जे.के. गर्ग

स्वामी जी ने कहा कि जीवन में हमारे चारों ओर घटने वाली छोटी या बड़ी, सकारात्मक या नकारात्मक सभी घटनायें हमें अपनी असीम शक्ति को प्रकट करने का अवसर प्रदान करती है। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था जिसके जीवन में ध्येय या संकल्प नहीं है तो ऐसा आदमी खेलती गाती, हँसती बोलती लाश ही है। जब तक व्यक्ति अपने जीवन के विशिष्ट मैकाले द्वारा प्रतिपादित और उस समय प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था के स्वामी विवेकानन्द जी घोर रोधी थे क्योंकि इस शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ बाबुओं की संख्या बढ़ाना था। वह ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे बालक का सर्वांगीण विकास हो सके।

स्वामी जी ने दुनिया के सामने जो वेदांत दर्शन रखा वो वाकई धर्म की सही विवेचना करता है; स्वामीजी कहते थे कि हम लोग वेदांत के बिना सांस तक नहीं ले सकते हैं जीवन में जो भी हो रहा है, सभी में वेदांत का प्रभाव है। उन्होंने कहा कि गीता में भगवान कृष्ण ने भी यही संदेश दिया था कि अवग-अलग कांच से होकर हम तक पहुंचने वाला प्रकाश एक ही है। स्वामी विवेकानन्द मानते थे कि अध्यात्म-विद्या और भारतीय दर्शन के ज्ञान के बिना विश्व अनाथ हो जायेगा। अपने अमेरिका प्रवास के समय वे अमेरिका में संगठित कार्य से किये गये कामों के फलस्वरूप चमत्कारिक परिणामों से स्वामी जी अत्यंत प्रभावित हुए थे।

उन्होंने ठान लिया था कि उन्हें भारत में भी इस संगठन कौशल को पुनर्जीवित करना है इसलिए विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना कर सन्यासियों तक को संगठित कर उन्हें समायोचित उत्तम कार्य करने का प्रशिक्षण दिया था। अमेरिका से लौटने पर स्वामी जी ने भारतीयों से नये स्फूर्ति पूर्व भारत के निर्माण हेतु आव्हान किया। भारत की जनता भी स्वामीजी के आव्हान पर अपने उत्थान हेतु गर्व के साथ निकल पड़ी। स्वामी ने संदेश दिया कि पूरब की दुनिया की सबसे बड़ी जरूरत धर्म से जुड़ी हुई नहीं है। उनके पास धर्म की कमी नहीं है, लेकिन भारत के लाखों पीड़ित जनता अपने सूखे हुए गले से जिस चीज के लिए बार-बार गुहार लगा रही है वो रोटी है। वो हमसे रोटी मांगते है, लेकिन हम उन्हें पत्थर पकड़ा देते हैं। भूख से मरती जनता को धर्म का उपदेश देना उसका अपमान है। सच्चाई तो यह ही है कि स्वामी जी कभी भी किसी धर्म की उपेक्षा की थी वो तो सभी धर्मों संप्रदायों का सम्मान करते थे।

हिंदू धर्म पर स्वामी विवेकानंद ने कहा कि हिंदू धर्म का असली संदेश लोगों को अलग-अलग धर्म संप्रदायों के खांचों में बांटना नहीं, बल्कि पूरी मानवता को एक सूत्र में पिरोना है। उनका हिन्दू धर्म रूढ़िवादी एवं अतार्किक मान्यताओं मानने वाला नहीं था। स्वामीजी ने उस समय क्रांतिकारी एवं विद्रोही बयान देते हुए कहा कि इस देश के तैंतीस करोड़ भूखे, दरिद्र और कुपोषण के शिकार लोगों को देवी देवताओं की तरह मन्दिरों में स्थापित कर दिया जाये और मन्दिरों से देवी देवताओं की मूर्तियों को हटा दिया जाये। उनका यह आव्हान आज भी एक बड़ा प्रश्नवाचक चिन्ह खड़ा करता है। उनके इस आव्हान को सुनकर उस समय सम्पूर्ण पुरोहित वर्ग की घिग्घी बंध गई थी।

आज कोई नामी गिरामी साधु तो क्या सरकारी मशीनरी भी किसी अवैध मंदिर की मूर्ति को हटाने का जोखिम नहीं उठा सकती। स्वामी जी ने कहा कि जीवन में हमारे चारो ओर घटने वाली छोटी या बड़ी, सकारात्मक या नकारात्मक सभी घटनायें हमें अपनी असीम शक्ति को प्रकट करने का अवसर प्रदान करती है।

स्वामी विवेकानंद के मन में हमेशा अपने आपसे यह सवाल करते थे कि क्या सच में भगवान है? रामकृष्ण जी ने उनके इस प्रश्न के उत्तर में कहा, हाँ, मैंने भगवान को देखा है ठीक वैसे ही जैसे अभी मैं तुम्हें देख रहा हूँ। भगवान तो हर जगह व्याप्त है, बस तुम्हें उन्हें देखने के लिए वो दृष्टि चाहिए। अपने गुरु की बात सुनकर उनको विश्वास हो गया कि ईश्वर है।

स्वामीजी ने अपना सारा जीवन अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस देव को समर्पित कर दिया। स्वामीजी ने बतलाया कि जब हम पृथ्वी में एक बीज को बोते हैं तो उसके चारों ओर हवा और पानी की व्यवस्था भी करते हैं। लेकिन क्या वो बीज पृथ्वी, हवा या जल बन जाता है? नहीं। बीज हवा, पानी और पृथ्वी को आत्मसात करता है और इनके सहयोग से स्वयं का विकास करता है और पौधे के रूप में विकसीत होकर बढ़ता है। ठीक ऐसा धर्म के मामले में भी है। एक हिंदू को मुसलमान नहीं बनना चाहिये और ना ही मुसलमान को हिन्दू। एक इसाई को हिंदू या बौद्ध नहीं बनना चहिए और न ही किसी हिंदू या बौद्ध को इसाई बनना चाहिए। लेकिन प्रत्येक को दुसरे धर्म का सम्मान अवश्य करना चाहिए।

उन्होंने अपने उन्तालीस वर्ष की अल्पायु (12 जनवरी 1863से 4 जुलाई 1902) में जो काम किये उसके लिये मानव मात्र हजारों साल तक उन्हें याद करेगा। स्वामी विवेकानंद जी के अंतिम शब्द थे हो सकता है मै अपने फटे हुए वस्त्र की तरह शरीर को उतार फेंकू और मेरा शरीर छोड़ दु परंतु मेरा काम नही रुकेगा। विवेकानन्द जी के शिष्यों के अनुसार जीवन के अन्तिम दिन यानि 4 जुलाई 1902 को भी उन्होंने अपनी ध्यान करने की दिनचर्या को नहीं बदला था उन्होंने उस दिन घंटों तक ध्यान किया और ध्यानावस्था में ही अपने ब्रह्मरन्ध्र को भेद कर महासमाधि ले ली। बेलूर में गंगा तट पर चंदन की चिता पर उनकी अंत्येष्टि की गयी।

उनके शिष्यों और अनुयायियों ने उनकी स्मृति में वहाँ एक मन्दिर बनवाया और समूचे विश्व में विवेकानंद तथा उनके गुरु रामकृष्ण के सन्देशों के प्रचार के लिये 130 से अधिक केन्द्रों की स्थापना की। समय के साथ यह बात सही साबित हो गई है कि स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक के राष्ट्र निर्माण के समस्त प्रयत्नों में स्वामी जी के कार्यों और शिक्षाओं का अमूल्य योगदान रहा है और आगे भी रहेगा रहेगा।

भारत के अध्यात्म, धर्म, दर्शन और सांस्कृतिक गौरव को विश्व मे प्रतिष्ठित करते हुए मानवता के कल्याण और राष्ट्र पुनरुत्थान के प्रति जीवन समर्पित कर देने वाले प्रेरक स्वामी जी का जीवन और ओजस्वी संदेश आज भी हमे जीवन का सही दिशा में मार्ग प्रशस्त कर रहे है। परम पूज्य स्वामी जी के 160 वें जन्म दिन के पावन अवसर पर हम सभी को उनके द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण करने का संकल्प लेना चाहिये। स्वामी विवेकानंद जी की जन्मतिथि को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में हमारे देश में मनाया जाता है। स्वामीजी सैकड़ों सालों से हमारे लिये लिए प्रेरणा का स्त्रोत रहे हैं और आगे भी रहेंगे।

डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा, जयपुर

भारत व यू.ए.ई. के सैनिकों का महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में संयुक्त युद्धाभ्यास जारी

आतंकी समूहों के हमले का मुंहतोड़ जवाब देने की तैयारी कर रहे सैनिक

बीकानेर, (निसं)। एशिया की सबसे बड़ी युद्धाभ्यास स्थली महाजन फील्ड फायरिंग रेंज एक बार फिर विदेशी सैनिकों के साथ हमारी सेना के संयुक्त युद्धाभ्यास का साक्षी बनी है। रेंज के धोरे राइफल से निकल रही गोलियों की आवाज के साथ बम के धमाकों से गूंज रहे हैं। पहले पांच दिन के अभ्यास में भारत और यूएई के 90 सैनिकों ने एक-दूसरे के हथियारों को समझा और युद्ध के रणनीतिक कौशल पर बात की।

भारत व यूएई के सैनिकों ने एशिया की सबसे बड़ी युद्धाभ्यास स्थली महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में संयुक्त युद्धाभ्यास किया।

- **भारत और यूएई की सेना का संयुक्त युद्धाभ्यास डेजर्ट साइकलोन 2 से 15 जनवरी तक होगा**

अब फायरिंग और बम से हमले जैसे हालात पर अभ्यास शुरू हो गया है। एक दशक से संयुक्त राष्ट्र के चेप्टर के तहत काउंटर टेररिज्म पर हर साल विदेशी सेना के साथ महाजन रेंज में भारतीय सेना संयुक्त युद्धाभ्यास कर रही है। दूसरे देश की सैन्य टुकड़ी अपने हथियार और साजो-सामान के साथ आकर आतंकियों पर सैन्य ऑपरेशन का अभ्यास करती है। अभी 2 जनवरी से यूएई और भारतीय सेना के बीच अभ्यास चल रहा है। इसमें विश्व में आतंकी समूहों के हमले के बदलते तौर-तरीकों से निपटने का सैनिक अभ्यास कर रहे हैं।

काफी समय से चल रहे रूस-यूक्रेन और हमास-इजराइल युद्ध से सामने आई रणक्षेत्र की नई चुनौतियों को लेकर इस संयुक्त युद्धाभ्यास में फोकस किया जा रहा है। सैनिक इसमें काउंटर सैन्य कार्रवाई के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं। बीते एक दशक में भारतीय सेना ने महाजन में अमरीका, ब्रिट्रेन, रूस, फ्रांस, ओमान के साथ संयुक्त युद्धाभ्यास किए हैं। अब यूएई के साथ चल रहा है। भारत और अन्य देश के सैनिकों के 90 से 120 सैनिक 13 से 15 दिन तक संयुक्त अभ्यास करते हैं। दुश्मन के हमले या आतंकी हमले का महाजन रेंज में काल्पनिक खाका तैयार किया जाता है। अधिकांश युद्धाभ्यास दिसम्बर-जनवरी में होते हैं। कड़ाके की ठंड के सीजन में रेतीले धोरों में यह अभ्यास होता है। कई बार यह अगस्त-सितम्बर के गर्मी के मौसम में भी अभ्यास करते हैं। एशिया की सबसे बड़ी युद्धाभ्यास नोड महाजन फील्ड फायरिंग रेंज है। करीब 3.37 लाख एकड़ में फैली रेंज को गांवों को खाली कर बनाया गया था। इसमें बने पुराने बने मकान आदि अभ्यास में काम आते हैं।

भारत और यूएई की सेना का संयुक्त युद्धाभ्यास डेजर्ट साइकलोन 2 से 15 जनवरी तक महाजन रेंज में चल रहा है। यूएई की जायेद फर्स्ट ब्रिग्रेड के 45 सैनिक और भारत की मैकेनाइज्ड इंफ्रेन्ट्री रेजिमेंट के 45 सैनिक शामिल हैं। 28 नवम्बर से 11 दिसम्बर 2022 तक 13 दिन भारत और ऑस्ट्रेलिया की सेना का संयुक्त युद्धाभ्यास चला। दोनों देशों के 120 सैनिकों ने एक दूसरे के संगठन के ढांचे, युद्ध की कार्यशैली और छोटे ड्रिल समझने के लिए अभ्यास किया। भारतीय सेना और ओमान रॉयल आर्मी के बीच 1 से 13 अगस्त तक संयुक्त सैन्य अभ्यास अलनजहा-2022 चला। जम्मू-कश्मीर में भारतीय सेना के ऑपरेशन जैसे काउंटर टेररिज्म को लेकर अभ्यास किया गया। 8 से 21 फरवरी 2021 तक भारत और अमरीका की सेना का संयुक्त युद्धाभ्यास महाजन में हुआ। इसमें दोनों देशों के 120 सैनिक शामिल हुए। उन्होंने आतंकियों पर कार्रवाई के अनुभव साझा किए। 30 दिसम्बर 2015 से 14 जनवरी 2016 तक भारत और फ्रांस का महाजन में संयुक्त अभ्यास हुआ।

इसका दूसरा संस्करण शक्ति-2019 भी 31 अक्टूबर से 12 नवम्बर 2019 को किया गया। भारत और रूस की सेना के बीच संयुक्त युद्धाभ्यास इन्द्र-2013 महाजन में 19 से 28 अक्टूबर-2013 तक किया गया। इसका दूसरा संस्करण 8 से 18 नवम्बर 2015 को फिर किया गया। भारत और ब्रिटेन की सेना ने 1 से 14 सितम्बर 2017 तक संयुक्त युद्धाभ्यास अजेय वारियर-2017 महाजन रेंज में किया। इससे पहले दोनों देशों के बीच 2013 और 2015 में दो संयुक्त युद्धाभ्यास भी हुए।

''पीली आंख वाले कबूतर'' जोड़बीड़ रिजर्व कन्जर्वेटिव क्षेत्र में प्रवास करने लगे

बीकानेर, (निसं)। चार हजार किलोमीटर दूर रूस के साइबेरिया क्षेत्र से हजारों की तादाद में दुलर्भ घोषित ''पीली आंख वाले कबूतर'' बीकानेर के जोड़बीड़ रिजर्व कन्जर्वेटिव क्षेत्र में आकर प्रवास करने लगे है। एक दशक पहले तक यह उत्तर भारत में कुछ जगह सौ से पांच सौ की संख्या में आया करते थे। परन्तु साल दर साल पाकिस्तान से भारत में प्रवेश करने के बाद अधिकांश ने बीकानेर की तरफ रूख करना शुरू कर दिया। इस साल तो रेकॉर्ड दस हजार से ज्यादा कबूतर बीकानेर के जोड़बीड़ क्षेत्र में प्रवास कर रहे हैं। इसके पीछे कारण शिकार का भय नहीं, घास में इनके पसंदीदा खाने के बीज आदि भोजन का मिलना है। जिस कड़ाके की ठंड से राहत के लिए यहां आते हैं, वह तो मिलता ही है, साथ ही जाल और खेजड़ी के पेड़ों की झालदार टहनियां मिलती हैं। जिस पर बैठना इन्हें सबसे ज्यादा रास आ रहा है। वाइड लाइफ फोटोग्राफर व पक्षी प्रेमी राकेश शर्मा बताते हैं कि दो दशक से जोड़बीड़ में जा रहे हैं। साल 2012 में पहली बार यहां ''पीली आंख वाले कबूतर'' दिखाई पड़े थे। इस साल करीब ढाई-ढाई हजार कबूतरों के चार समूह आए हैं। ऐसे में संख्या दस हजार से अधिक है। यह दुलर्भ श्रेणी का पक्षी है। साइबेरिया व ठंडे क्षेत्रों में इसका शिकार बहुत ज्यादा होने से माना गया कि इसकी आबादी दुनिया में महज एक प्रतिशत ही बची है।

- **चार हजार किलोमीटर दूर रूस के साइबेरिया क्षेत्र से ''पीली आंख वाले कबूतर'' बीकानेर आने लगे**
- **इस साल रेकॉर्ड दस हजार से ज्यादा कबूतर बीकानेर के जोड़बीड़ क्षेत्र में प्रवास कर रहे हैं**

चार हजार किलोमीटर दूर रूस के साइबेरिया क्षेत से हजारों की तादाद में दुलर्भ घोषित ''पीली आंख वाले कबूतर'' बीकानेर के जोड़बीड़ रिजर्व कन्जर्वेटिव क्षेत्र में आकर प्रवास करने लगे है। एक दशक पहले तक यह उत्तर भारत में कुछ जगह सौ से पांच सौ की संख्या में आया करते थे। परन्तु साल दर साल पाकिस्तान से भारत में प्रवेश करने के बाद अधिकांश ने बीकानेर की तरफ रूख करना शुरू कर दिया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 8 जनवरी 2024

पौष मास कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, विक्रम सम्वत 2080, अनुराधा नक्षत्र रात्रि 10.03 तक, गडयोग रात्रि 2.55 तक, कौलव करण दिन 12.23 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति - सूर्य-धनु, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-धनु, बुध-धनु, गुरु-मेष, शुक्र-वृश्चिक, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में संचार करेगा। आज सवार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 10.03 तक है।

श्रेष्ठ चौघडिया - अमृत सूर्योदय से 8.39 तक शुभ - 9.57 से 11.59 तक, चर 1.51 से 3.09 तक, लाभ-अमृत 3.09 से सूर्यास्त तक

राहुकाल - 7.30 से 9.00 तक, सूर्योदय 7.21 सूर्यास्त 5.45

मेष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। अनावश्यक धन खर्च होगा।

वृष

व्यावसायिक कार्यों में आ अड़चनें दूर होने लगेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

मिथुन

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

कर्क

व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। नौकरी पैशा व्यक्तियों को भाग-दौड से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में अथितियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

कन्या

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता-सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरी पैशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

धनु

स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में जल्दबाजी करना ठीक नहीं रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा।

मकर

आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे।